'मीन' लग्न

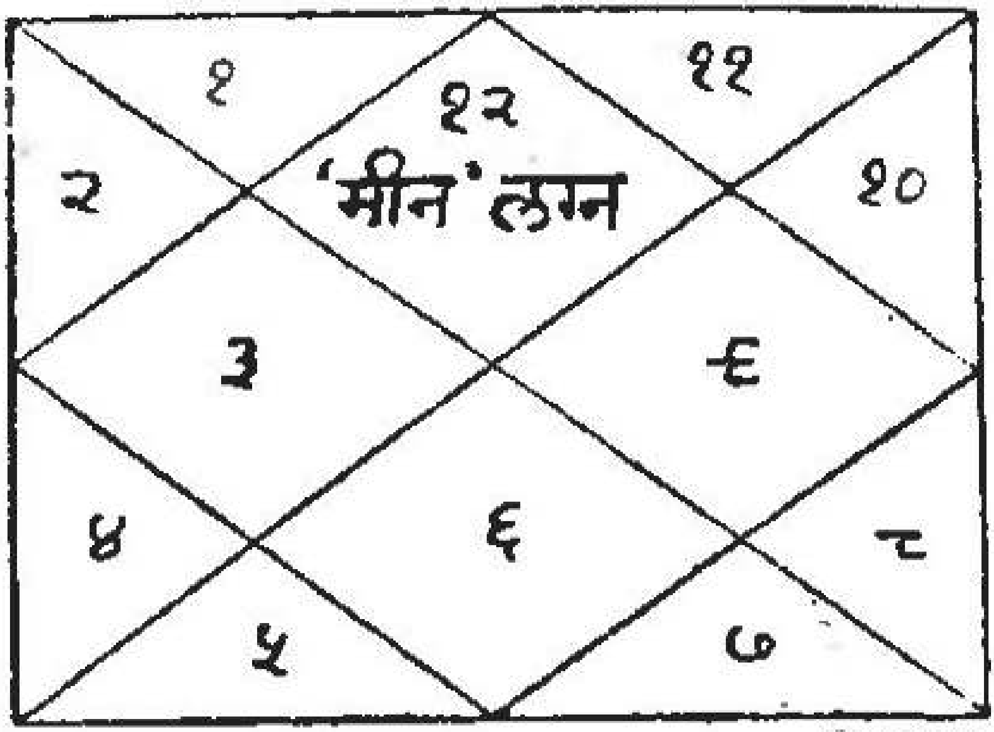

१३१४

['मीन' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मीन' लग्न का फलादेश

'मीन' लग्न में जन्म लेने वाला जातक सामान्य कद का, बड़ी आँखों वाला तथा बड़े मस्तिष्क वाला होता है। उसकी ठोड़ी में गड्ढा होता है।

ऐसा व्यक्ति मित्र प्रकृति वाला, सतोगुणी, प्रचण्ड, विनम्र, चतुर, चंचल, धूर्त, आलसी, रोगी, अल्पभोजी, श्रेष्ठ पण्डित, यशस्वी, सुरतिवान्, स्त्री-प्रिय, जल-क्रीड़ा करने में कुशल, बहु-सन्ततिवान् तथा श्रेष्ठ रत्नाभूषणों को धारण करने वाला होता है।

'मीन' लग्न वाले जातक की प्रारम्भिक अवस्था सामान्य ढंग से व्यतीत होती है, मध्यमावस्था में वह दुःखी रहता है तथा अन्तिम अवस्था में सुख भोगता है।

'मीन' लग्न वाले जातक का भाग्योदय २१-२२ वर्ष की आयु में होता है।

'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१५ से १४२२ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'मीन' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१५ से १३२६ के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३१५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३१६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३१७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३१८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३१९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३२०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३२१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३२२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३२३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३२४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३२५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३२६

'मीन' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२७ से १३३८ के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३२७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३२८
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३२९
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३३०
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३३१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३३२
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३३३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३३४
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३३५
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३३६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३३७
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३३८

'मीन' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश संख्या उदाहरण-कुण्डली १३३९ से १३५० के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३३९
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३४०
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३४१
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३४२
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३४३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३४४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३४५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३४६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३४७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३४८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३४९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३५०

'मीन' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५१ से १३६२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३५१
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३५२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३५३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३५४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३५५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३५६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३५७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३५८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३५९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३६०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३६१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३६२

'मीन' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६३ से १३७४ के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३६३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३६४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३६५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३६६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३६७

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३६८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३६९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३७०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३७१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३७२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३७३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३७४

'मीन' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७५ से १३८६ के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३७५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३७६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३७७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३७८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३७९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३८०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३८१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३८२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३८३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३८४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३८५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३८६

'मीन' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'मीन' लग्न वालो की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८७ से १३९८ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मीन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए।

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३८७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३८८
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३८९
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३९०
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३९१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३९२
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३९३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३९४
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३९५
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३९६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३९७
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३९८

'मीन' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३९९ से १४१० के बीच देखना चाहिए।

२. 'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३९९
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १४००
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १४०१
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १४०२
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १४०३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १४०४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १४०५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १४०६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १४०७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १४०८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १४०९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १४१०

'मीन' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४११ से १४१२ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १४११
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १४१२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १४१३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १४१४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १४१५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १४१६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १४१७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १४१८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १४१९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १४२०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १४२१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १४२२

●

'मीन' लग्न में 'सूर्य'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : सूर्य

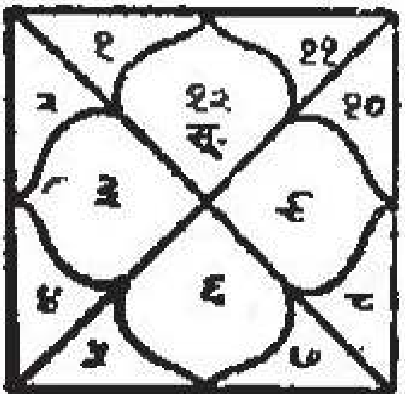

१४२५

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं प्रभाव में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार तथा अन्य रोग होने की सम्भावना भी रहती है। शत्रु-पक्ष पर विजय पाने तथा अपना सम्मान बढ़ाने के लिए उसे विशेष दौड़धूप करनी पड़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के बाद स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक आमदनी के लिए भी अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

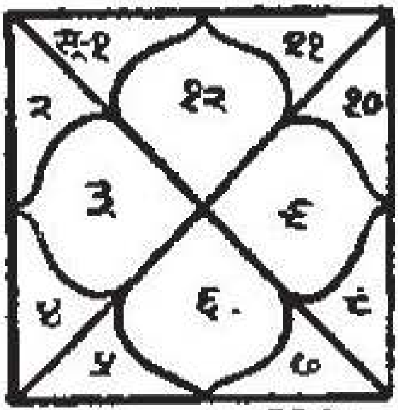

१३१६

दूसरे भाव में 'मंगल' की राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के प्रभाव एवं धन में वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

सातवीं नीच तथा शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ कमी आती है तथा दैनिक जीवन में भी परेशानियाँ रहती हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : सूर्य

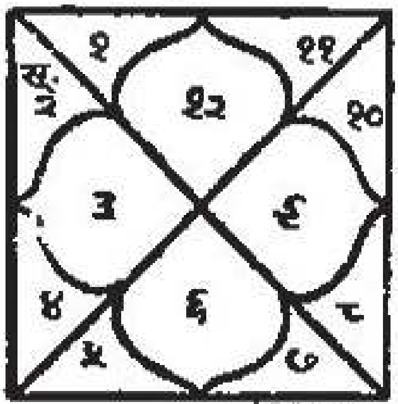

१३१७

तीसरे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता रहता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से शारीरिक श्रम द्वारा भाग्य की उन्नति तो होती है, परन्तु धर्म की उन्नति नहीं हो पाती। जीवन सामान्य ढंग से बीतता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

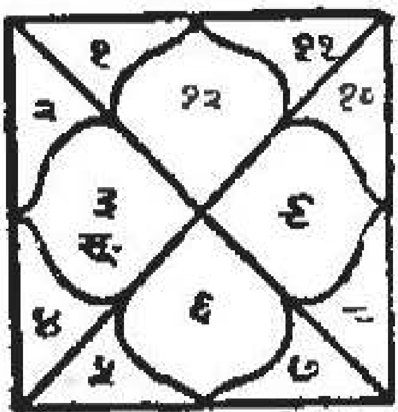

१३१८

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के सुख तथा प्रभाव में वृद्धि होती है, परन्तु माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी और परेशानियाँ भी रहती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, कुटुम्ब एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, यश प्रतिष्ठा एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : पंचमभाव : सूर्य

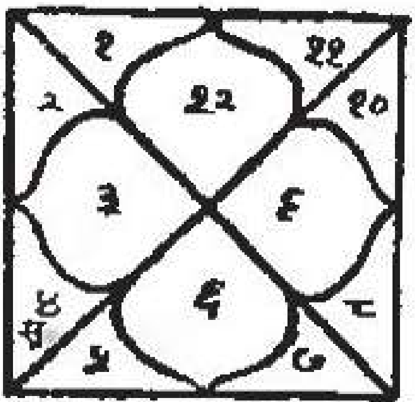

२३१९

पाँचवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कुछ कष्ट होता है, परन्तु कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं वाणी की शक्ति में वृद्धि होती है। मस्तिष्क में चिन्ता एवं क्रोध का निवास भी रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु परिश्रम द्वारा सफलता भी मिलती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : षष्ठभाव : सूर्य

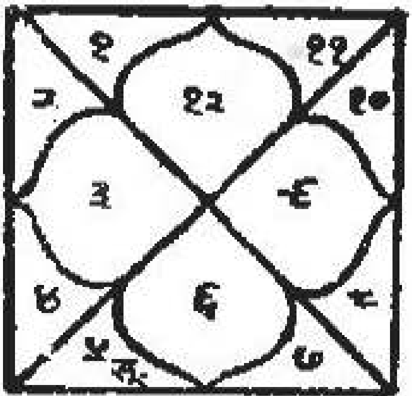

२३२०

छठे भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर विजय पाता है तथा झगड़े-झंझटों से लाभ उठाता है। उसे रोग आदि भी नहीं होते। वह बड़ा हिम्मती, धैर्यवान् तथा परिश्रमी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी कुछ कष्ट होता है। खर्च की अधिकता से मन अशान्त रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तमभाव : सूर्य

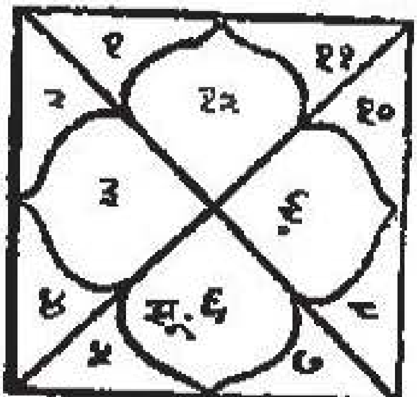

२३२१

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक का स्त्री-पक्ष से कुछ वैमनस्य रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में अधिक दौड़-धूप करने से ही सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है, परन्तु शारीरिक परेशानियाँ भी रहती हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

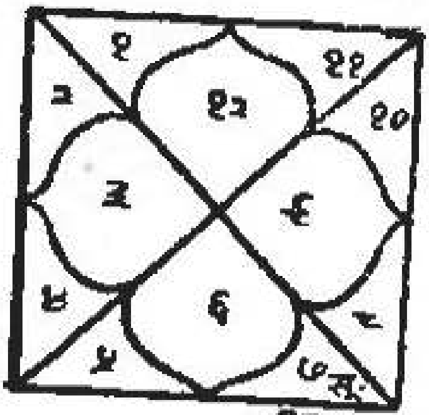

१३२२

आठवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित नीच के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु पर घोर संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व-शक्ति की भी हानि होती है। शत्रु-पक्ष से भी कष्ट मिलता है। ननसाल-पक्ष दुर्बल रहता है। पेट के निम्न भाव में विकार भी होता है।

सातवीं मित्र तथा उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव : सूर्य

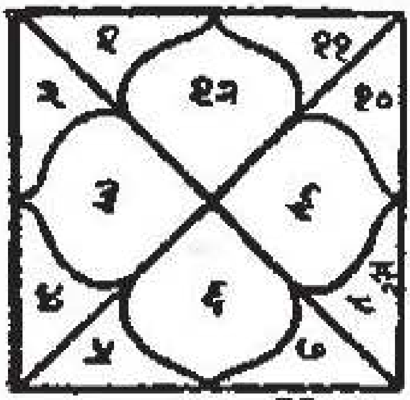

१३२३

नवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा प्रभाव बढ़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ विरोध रहता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ पराक्रम, प्रभाव तथा पुरुषार्थ की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव :सूर्य

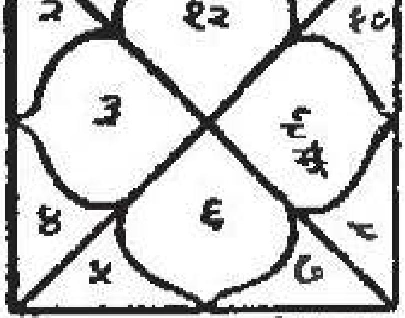

१३२४

दसवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक का अपने पिता से कुछ वैमनस्य रहता है राज्य के क्षेत्र में प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : सूर्य

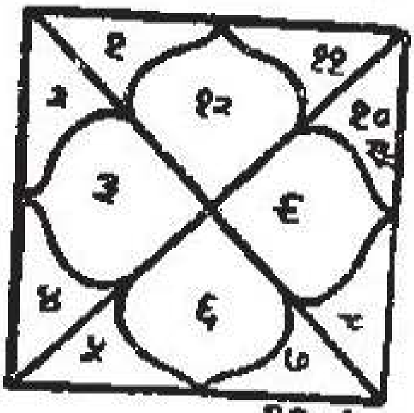

१३२५

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी को खूब बढ़ाता है। शत्रु-पक्ष पर भी विजय मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : सूर्य

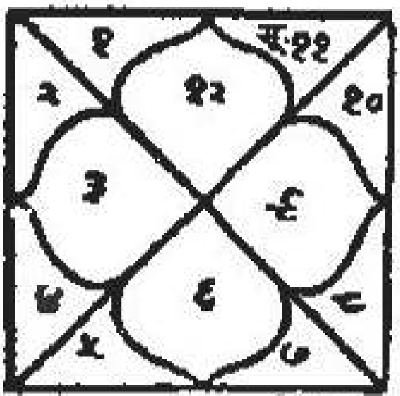

१३२६

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को खर्च चलाने में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी रहती है। शत्रु-पक्ष भी कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से खर्च के बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति अहंकारी तथा क्रोधी भी होता है।

'मीन' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

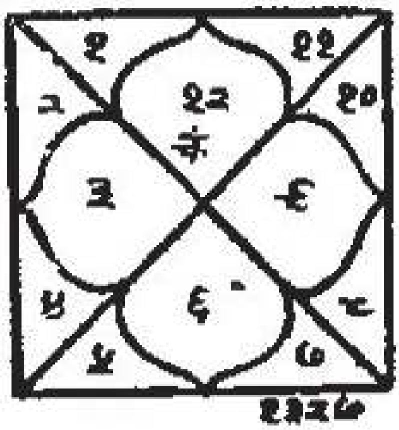

१३२७

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, सम्मान तथा यश की वृद्धि होती है। वह मधुरभाषी, सर्वप्रिय तथा प्रभावशाली होता है। उसे सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का भी श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि-बल से अच्छा लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

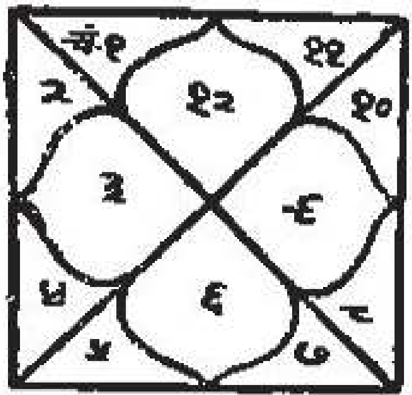

६३२८

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति मिलती है। सन्तान-पक्ष से कुछ परेशानी होती है, फिर भी सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का अच्छा लाभ होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा दैनिक जीवन आनन्दमय बना रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

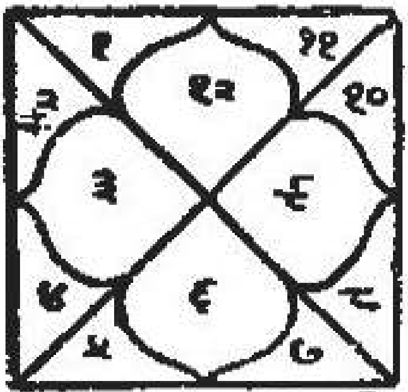

६३२९

तीसरे भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है तथा विद्या एवं सन्तान-पक्ष का भी पूर्ण सहयोग मिलता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में रुकावटें आती हैं। ऐसा व्यक्ति असहिष्णु होता है, अतः उसे यश भी कम मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

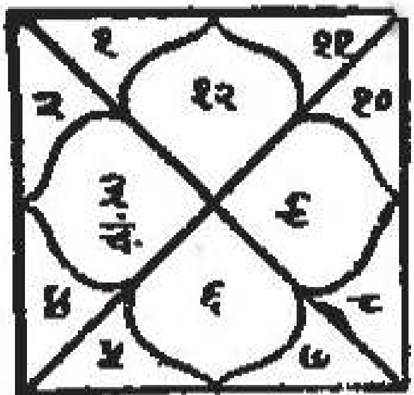

६३३०

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। विद्या तथा संतान पक्ष में भी उन्नति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से बुद्धि-बल से व्यवसाय में उन्नति होती है तथा राज्य-पक्ष से सम्मान तथा विद्या के सहयोग प्राप्त होता है। उसकी अनेक प्रकार से उन्नति होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : पंचमभाव : चन्द्र

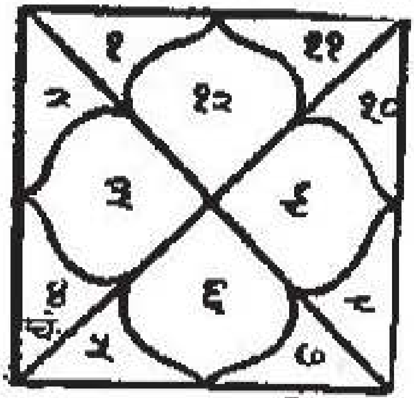

२३२१

पाँचवें भाव में स्वराशि में स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है। वह वाक्पटु तथा मीठे स्वभाव का, गंभीर, दूर-दर्शी तथा स्थिर विचारों का व्यक्ति होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धि-बल द्वारा उसकी आमदनी की वृद्धि होती है, यद्यपि उसे कुछ असन्तोष भी रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

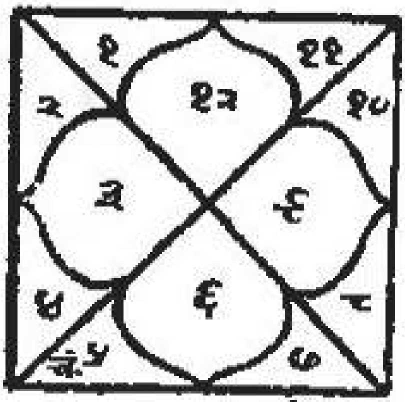

०३२२

छठे भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से अशान्ति रहती है, तथा बुद्धि-बल से उन पर प्रभाव स्थापित हो पाता है। सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहने के कारण कष्ट होता है तथा बाहरी स्थानों से भी असन्तोषजनक लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

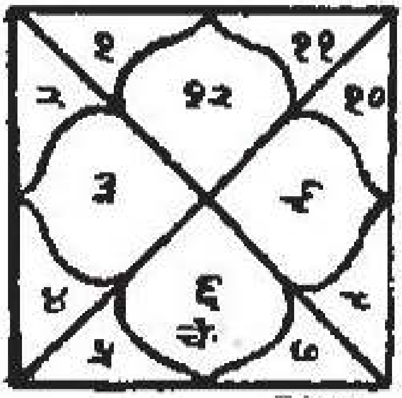

२३२३

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सुन्दर तथा बुद्धिमती स्त्री मिलती है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। सन्तान-पक्ष, घरेलू सुख तथा विद्या-बुद्धि की भी उन्नति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, सम्मान एवं योग्यता की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुंडली में 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

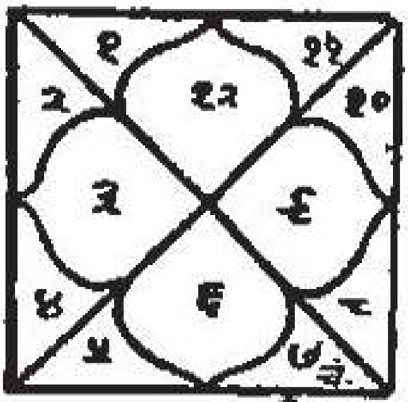

१३३४

आठवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। विद्या एवं सन्तान-पक्ष में कमी रहती है। धन तथा मस्तिष्क अशान्त रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव के देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सामान्य जीवन बिताता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव : चन्द्र

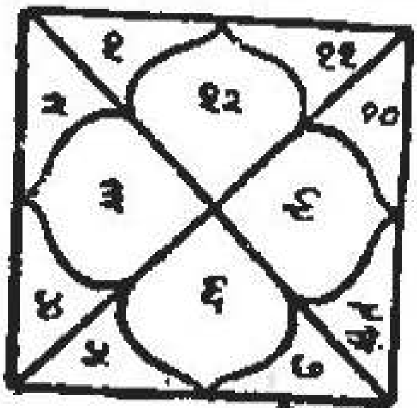

१३३५

नवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति तथा धर्म पालन में रुकावटें आती हैं। सन्तान तथा विद्या का पक्ष भी कमजोर रहता है। मन-मस्तिष्क में परेशानियाँ रहती हैं।

सातवीं उच्च-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में पर्याप्त वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : दशमभाव : चन्द्र

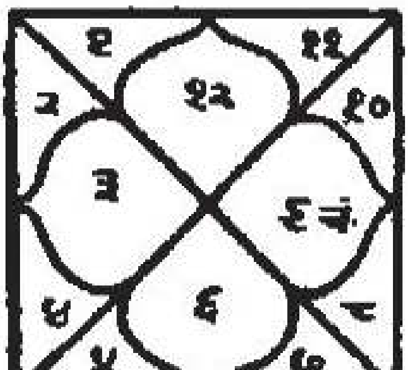

१३३६

दसवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में वांछित सफलताएँ प्राप्त होती हैं। वह विद्वान्, नियमों का पालक, बुद्धिमान् तथा संततिवान भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति धर्मी तथा भाग्यशाली होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : चन्द्र

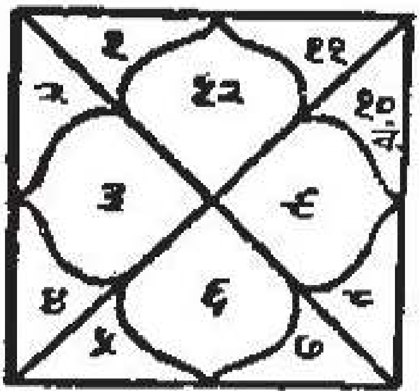

२३१७

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-बल द्वारा आमदनी में पर्याप्त वृद्धि करता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि-पक्ष की उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। वह स्वार्थी तथा अपनी ही उन्नति की कामना करने वाला होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

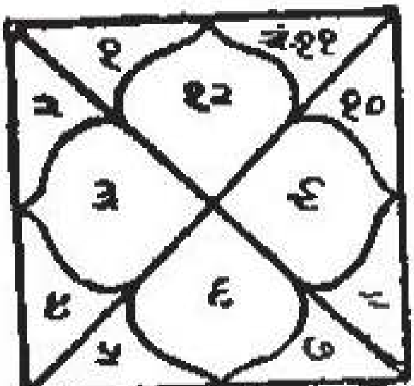

२३१८

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ भी मिलता है। सन्तान-पक्ष से कष्ट तथा विद्या के क्षेत्र में कमी का सामना करना पड़ता है। मन-मस्तिष्क में परेशानी भी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से बुद्धि-बल से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है।

'मीन' लग्न में मंगल

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : मंगल

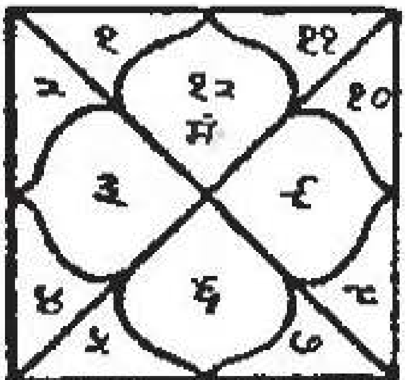

२३१९

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। धन, कुटुम्ब तथा भाग्य की भी समृद्धि होती है। चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का पर्याप्त सुख मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से व्यवसाय तथा घरेलू सुख की वृद्धि होती है तथा स्त्री का पक्ष उत्तम रहता है। आठवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : मंगल

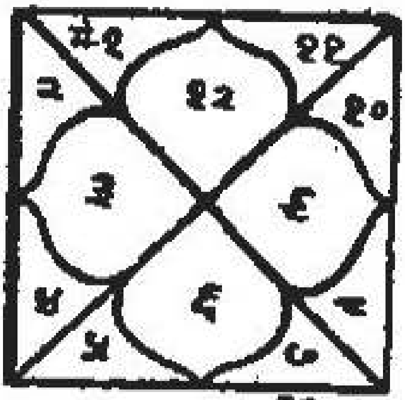

१३४०

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। चौथी नीच-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

आठवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन ठाठ-बाट का होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : मंगल

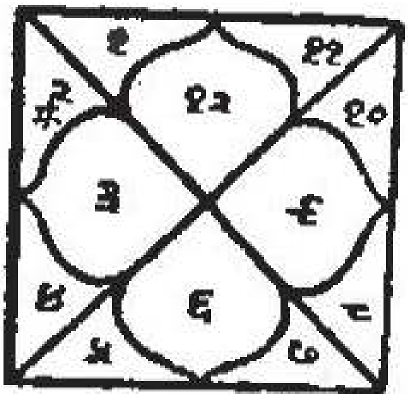

१३४१

तीसरे भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है तथा धन-कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर भी प्रभाव स्थापित होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है।

आठवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, सुखी, धर्मात्मा तथा शत्रुजयी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : मंगल

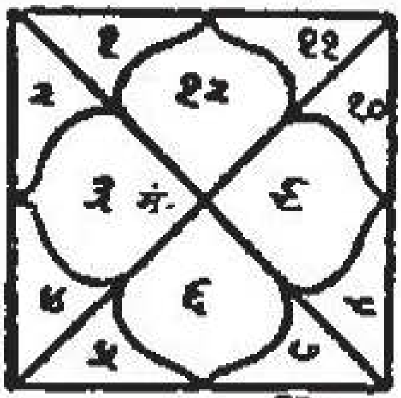

१३४२

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। चौथी मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री भाग्यशाली मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय एवं घरेलू-सुख की वृद्धि होती होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आठवीं शत्रु तथा उच्च-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से घर बैठे ही लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति बहुत ही धनी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : पंचमभाव : मंगल

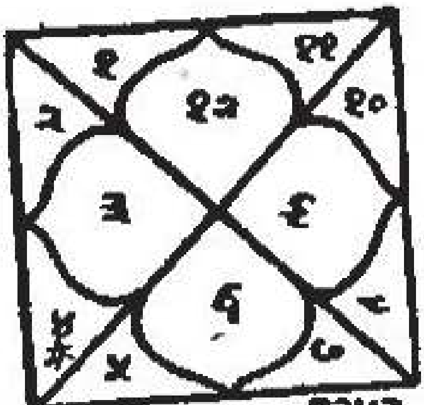

२३४८

पाँचवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'मंगल' के प्रभाव से जातक का सन्तान तथा विद्या का पक्ष दुर्बल रहता है। धन तथा कुटुम्ब के सुख तथा भाग्य एवं धर्म के पक्ष में भी कमी रहती है। चौथी सामान्य मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में कुछ वृद्धि होती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी में वृद्धि होती है। बारहवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से असंतोषपूर्ण लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : षष्ठभाव : मंगल

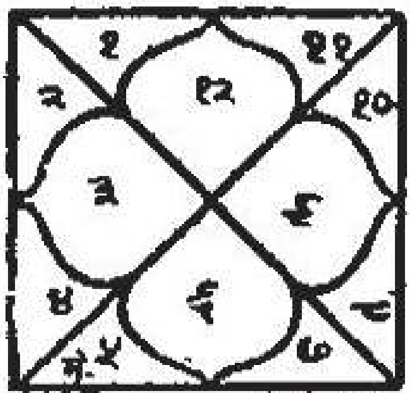

२३४७

छठे भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर बहुत प्रभाव रखता है। धन की कुछ कमी रहते हुए भी ठाठ से खर्च चलाता है। कुटुम्ब से थोड़ा सुख मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्ध भी असंतोषजनक रहते हैं। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : सप्तमभाव : मंगल

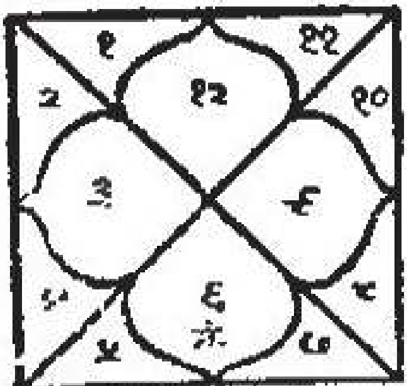

२३४६

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को भाग्यशालिनी स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय में भी लाभ होता है। वह धर्मात्मा तथा भाग्यवान् भी रहता है। चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आमदनी खूब बढ़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा तथा स्वाभिमान की वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : अष्टमभाव : मंगल

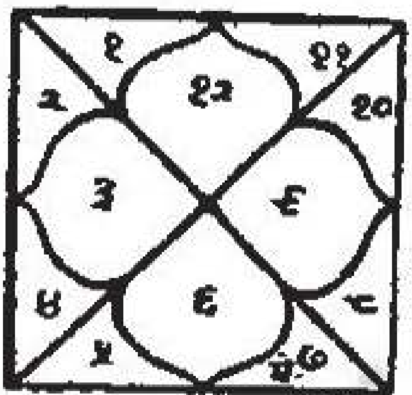

२३४८

आठवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, किन्तु भाग्य, धर्म तथा यश में कमी आती है। चौथी शत्रु तथा उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा अधिक मुनाफा उठाने की प्रवृत्ति बनती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन का संचय होता है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु पराक्रम बढ़ता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : नवमभाव : मंगल

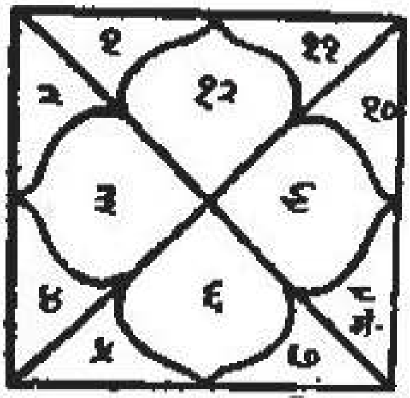

२३४७

नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। वह भाग्यशाली, धनी तथा यशस्वी होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च की कठिनाई रहती है तथा बाहरी संबंधों से भी असन्तोष रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से कुछ कमी के साथ भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है।

आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख पर्याप्त मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : दशमभाव : मंगल

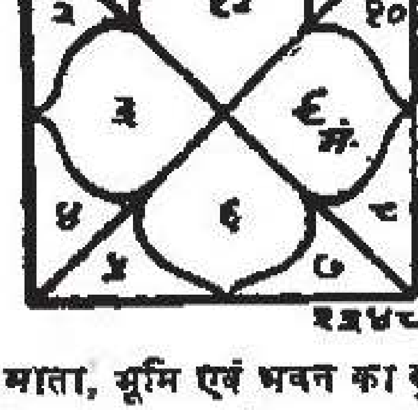

२३४८

दसवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छी सफलताएँ मिलती हैं। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव, यश, स्वाभिमान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। पाँचवीं नीचदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा वाणी में रूखापन झलकता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : एकादशभाव : मंगल

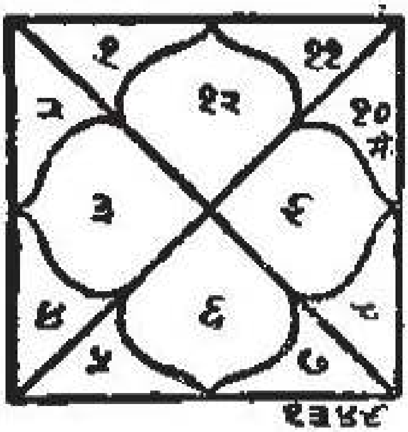

१३५४९

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। यह बड़ा भाग्यशाली तथा धर्मात्मा भी होता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है।

सातवीं नीच तथा मित्रदृष्टि से पञ्चम भाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' में स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : द्वादशभाव : मंगल

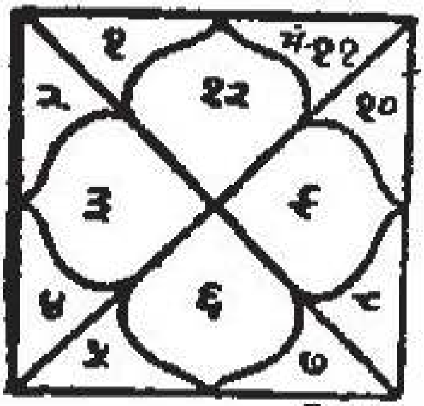

१३५५०

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब के सुख में भी कमी रहती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'मीन' लग्न में 'बुध'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : प्रथमभाव : बुध

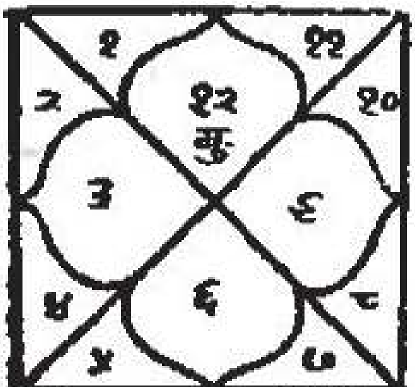

१३५५१

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी थोड़ा ही मिलता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : द्वितीयभाव : बुध

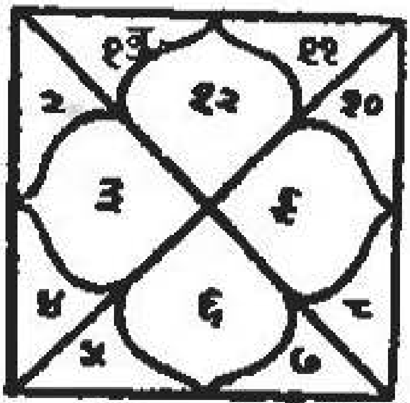

१३५२

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। माता तथा स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु भूमि एवं भवन का लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन भी उल्लासपूर्ण बना रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : तृतीयभाव : बुध

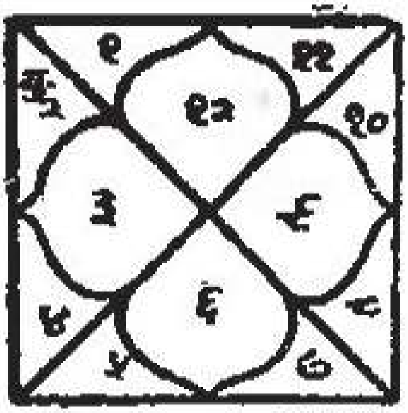

१३५३

तीसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का अच्छा सुख मिलता है। माता, भूमि, भवन, स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सुख-सफलता की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति यश को प्राप्त करता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : चतुर्थभाव : बुध

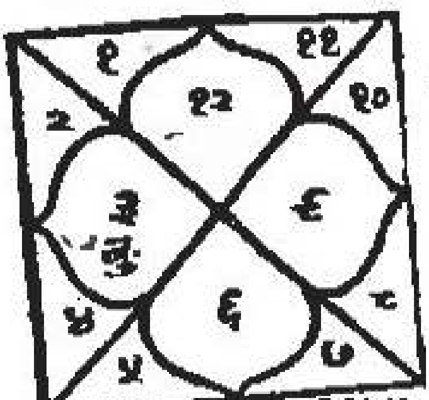

१३५४

चौथे भाव में स्वराशि स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का विशेष सुख मिलता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता मिलती है। घरेलू जीवन उल्लासपूर्ण रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा भाग्यशाली होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : पंचमभाव : बुध

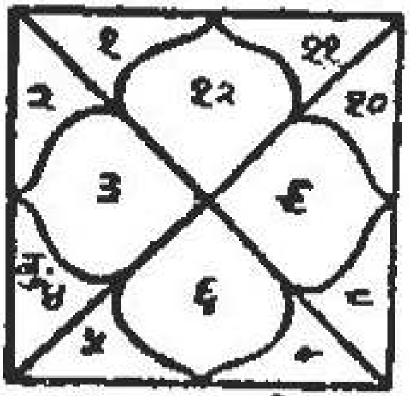

१३५५

पाँचवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष उन्नति प्राप्त होती है। वह मीठी वाणी बोलने वाला तथा कार्य-कुशल होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, विवेकी तथा यशस्वी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : षष्ठभाव : बुध

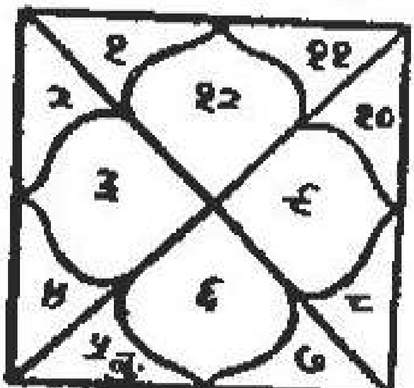

१३५६

छठे भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में शान्ति से काम निकालता है। माता तथा स्त्री से कुछ विरोध रहता है। भूमि तथा भवन का सुख भी कम ही मिलता है। व्यवसाय-क्षेत्र में बुद्धि-बल से सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : सप्तमभाव : बुध

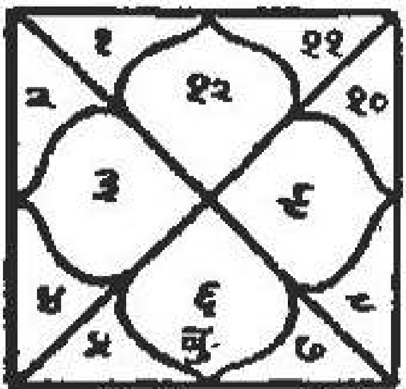

१३५७

सातवें भाव में स्वराशि स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है, तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है घरेलू जीवन अच्छा रहता है। माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख भी मिलता है।

सातवीं नीच तथा मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा गृहस्थी को चलाने में परिश्रम अधिक करना पड़ता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : अष्टमभाव : बुध

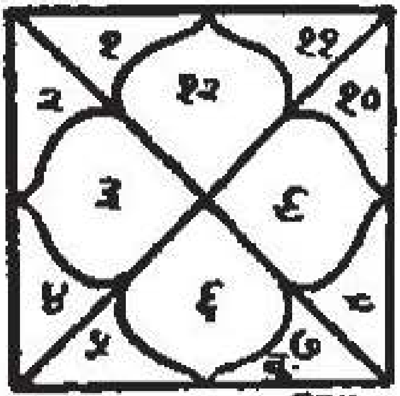

९३५८

सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति में वृद्धि होती है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। स्त्री के सुख में अधिक तथा माता के सुख में सामान्य कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः सुखी जीवन बिताता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : नवमभाव : बुध

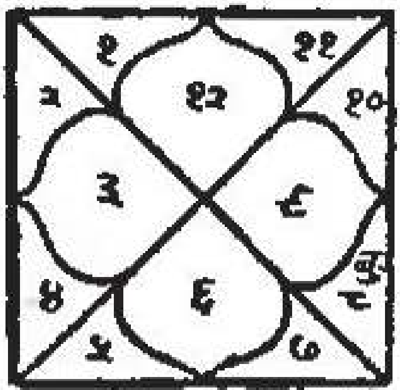

९३५९

नवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। माता, भूमि, भवन, स्त्री तथा व्यवसाय का भी श्रेष्ठ सुख मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, पराक्रमी तथा यशस्वी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : दशमभाव : बुध

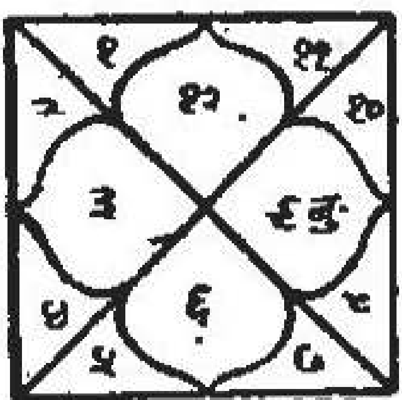

२३६०

दसवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, प्रतिष्ठा तथा लाभ की प्राप्ति होती है। स्त्री-पक्ष से भी सुख मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख की भी यथेष्ट प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : बुध

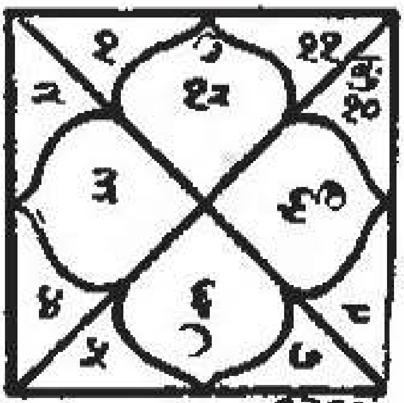

२३६१

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। माता, भूमि, भवन, स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की विशेष उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान्, मधुर-भाषी, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : बुध

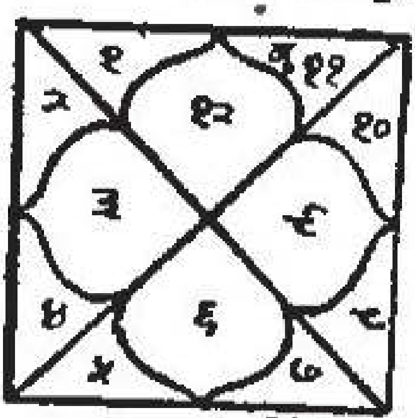

२३६२

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। माता, भूमि, भवन, घरेलू सुख, स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धैर्यवान् तथा हिम्मत वाला होता है।

'मीन' लग्न में 'गुरु'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : गुरु

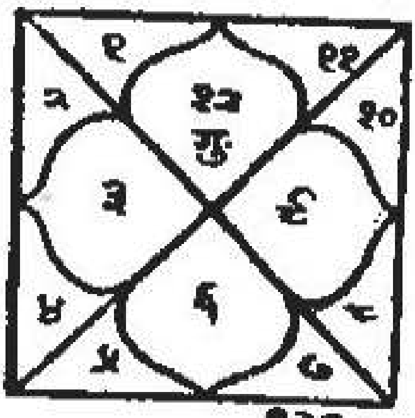

२३६३

पहले भाव में स्वराशि स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं। वह बड़ा धनी तथा व्यवसायी होता है। पाँचवीं उच्च दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री सुन्दर मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय की वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : गुरु

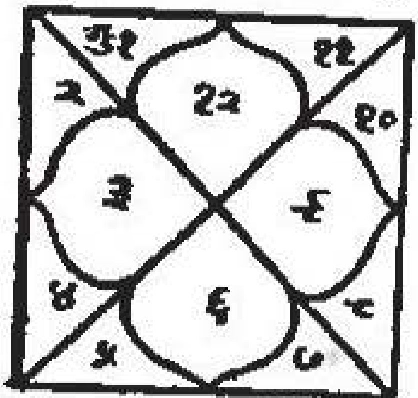

१३६४

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख की पर्याप्त वृद्धि होती है, परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से धन की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े के मामलों में धैर्य से काम लेकर सफलता पाता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से- स्वराशि में दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : गुरु

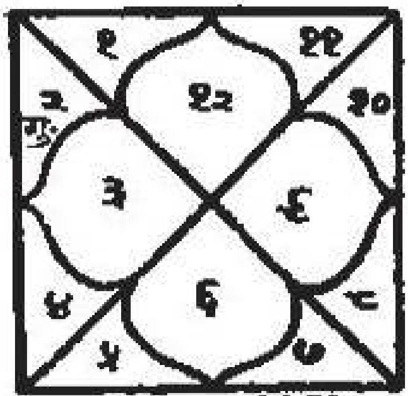

१३६५

तीसरे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख कुछ मतभेद के साथ प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। पिता से भी सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। नवीं नीच-दृष्टि से शत्रु राशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : गुरु

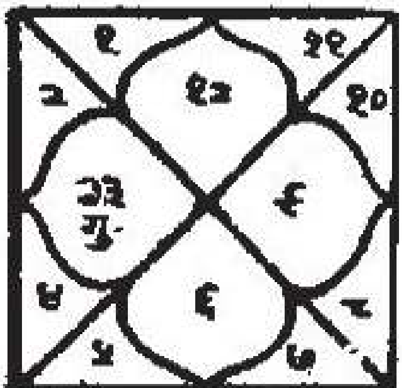

१३६६

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, यश तथा घरेलू सुख की वृद्धि होती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च के कारण परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों से भी असन्तोषजनक सम्बन्ध रहते हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : पंचमभाव : गुरु

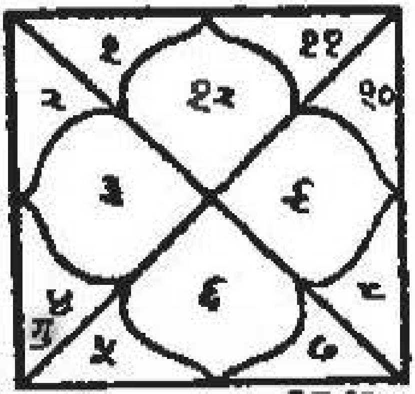

१३६७

पाँचवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित उच्च के 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या-बुद्धि तथा वाणी का श्रेष्ठ लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, स्वाभिमान, प्रतिष्ठा तथा स्वास्थ्य की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : षष्ठभाव : गुरु

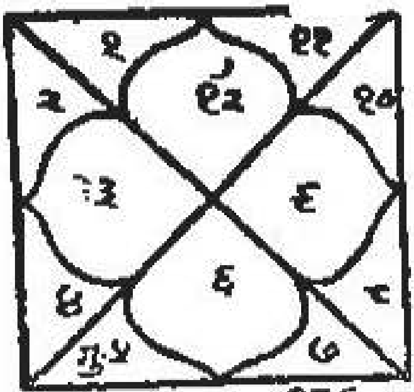

१३६८

छठे भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली रहता है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। वह अपने शारीरिक परिश्रम के बल पर उन्नति करता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव से देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से असंतोष होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तमभाव : गुरु

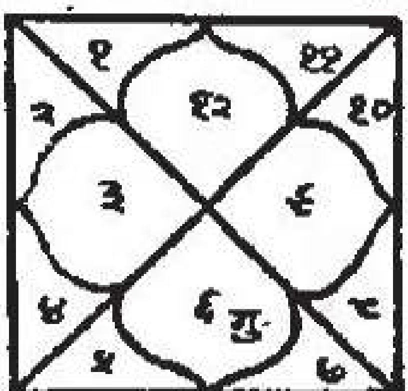

१३६९

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सुख सफलता की प्राप्ति होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों की उन्नति होती है। पाँचवीं नीच-तथा शत्रु-दृष्टि से एकादश भावको देखने से आमदनी कम रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, यश, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा कुछ असन्तोष के साथ भाई-बहिनों का सुख मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : गुरु

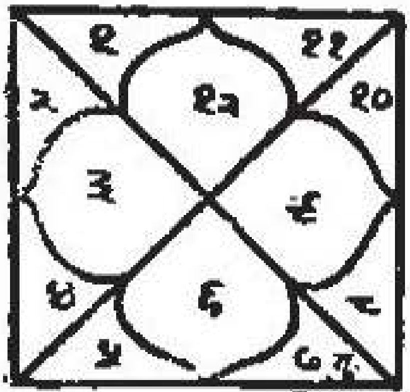

१३७०

आठवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व-शक्ति में वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव : गुरु

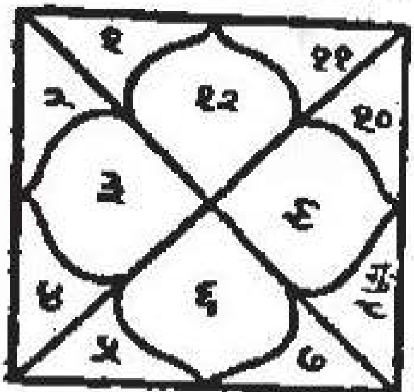

१३७१

नवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। राज्य, पिता एवं व्यवसाय-पक्ष से भी लाभ होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, यश तथा स्वाभिमान की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। नवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष से यथेष्ट सुख का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति वाणी का धनी तथा कलात्मक रुचि वाला होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : दशमभाव : गुरु

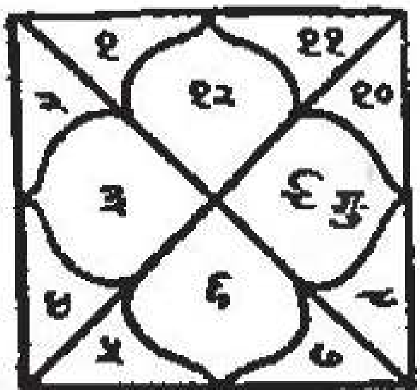

१३७२

दसवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलताओं तथा लाभ की प्राप्ति होती है। पाँचवीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। नवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा झगड़ों में विजय मिलती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी पराक्रमी गुणी, हुकूमत करने वाला तथा यशस्वी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : गुरु

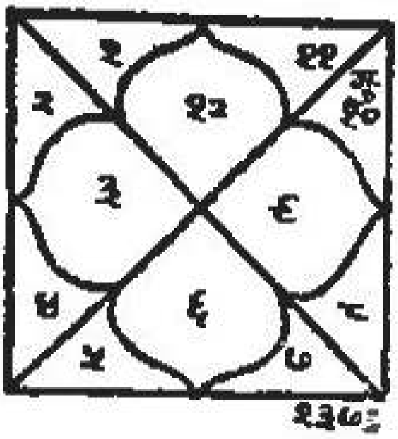

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में बहुत कमी आती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी हानि होती है। भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की अल्प वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के सुख में उन्नति होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर मिलती है तथा उससे सुख-सहयोग मिलता है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : गुरु

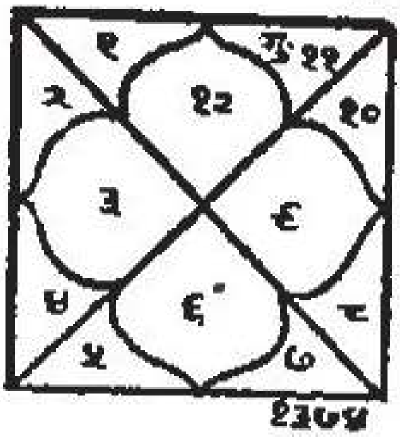

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी असन्तोष होता है। शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, पिता, राज्य तथा व्यवसाय के सुख तथा लाभ में भी कमी रहती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु पक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम-भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है परन्तु दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण बना रहता है।

'मीन' लग्न में 'शुक्र'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : शुक्र

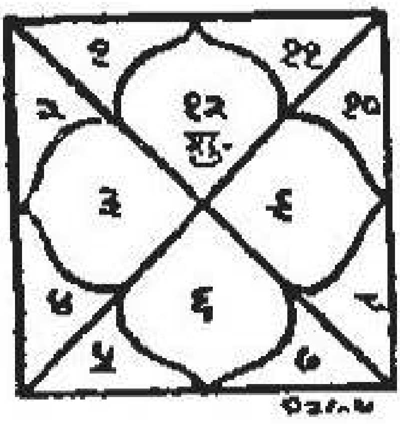

पहले भाव में सामान्य मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। आयु भी लम्बी होती है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। दैनिक जीवन आनन्दमय बना रहता है।

सातवीं मित्र तथा नीच-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री के सुख में कमी आती है, गृहस्थ जीवन असन्तोषपूर्ण रहता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

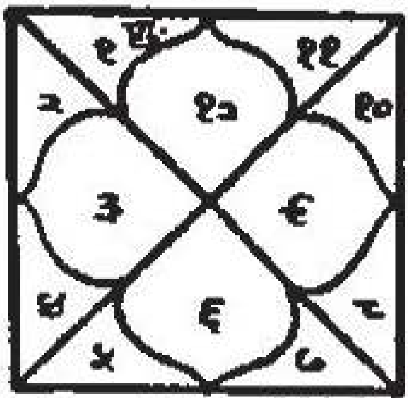

१३७६

दूसरे भाव में सामान्य मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक पुरुषार्थ द्वारा धन-वृद्धि का प्रयत्न करता है, परन्तु पूर्ण सफलता नंही मिलती। कुटुम्ब के सुख में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व-शक्ति का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी समझदारी से रईसी ढंग का जीवन बिताता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

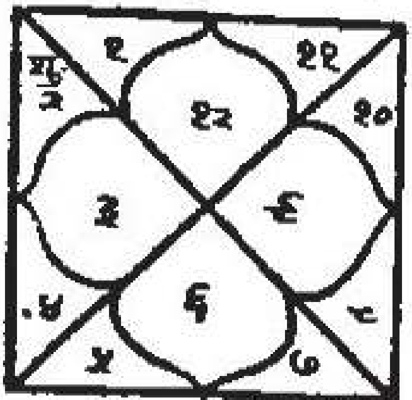

१३७७

तीसरे भाव में स्वराशि में स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों की शक्ति तो मिलती है, परन्तु उनसे कुछ परेशानी भी रहती है। पराक्रम की वृद्धि होती है। जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं, परन्तु वह अपने परिश्रम के बल पर पर्याप्त सुखी तथा समृद्ध जीवन बिताता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

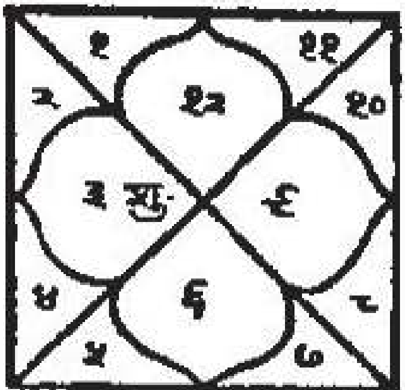

१३७८

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सह-योग सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है, परन्तु लाभ में कुछ कमी रहती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : पंचमभाव : शुक्र

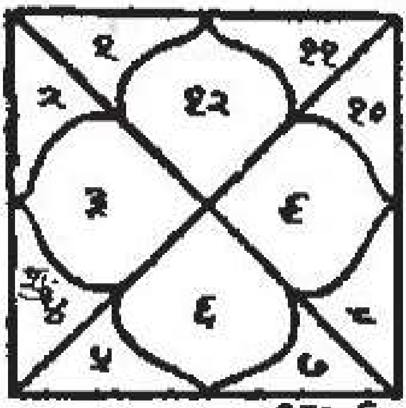

२३७९

पाँचवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष का यथेष्ट सुख मिलता है। भाई-बहिनों की शक्ति भी मिलती है। आयु तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती रहती है। वह धन के श्रम पर अपना प्रत्येक कार्य पूरा करता रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : षष्ठभाव : शुक्र

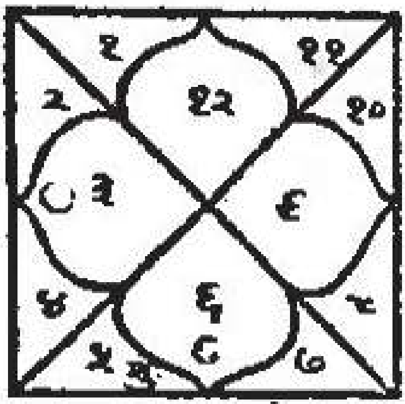

२३८०

छठे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से कठिनाइयाँ मिलती है, परन्तु अपनी चतुराई द्वारा वह उन पर विजय पा लेता है। भाई-बहिनों से कष्ट होता है तथा पराक्रम, पुरातत्त्व एवं आयु में कमी आती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती रहती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

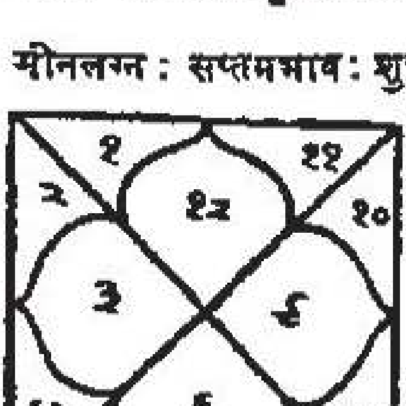

२३८१

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ आती हैं तथा भाई-बहिनों का सुख एवं पराक्रम भी कमजोर रहता है। आयु एवं पुरातत्त्व में भी कमी आती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, शक्ति, स्वाभिमान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : शुक्र

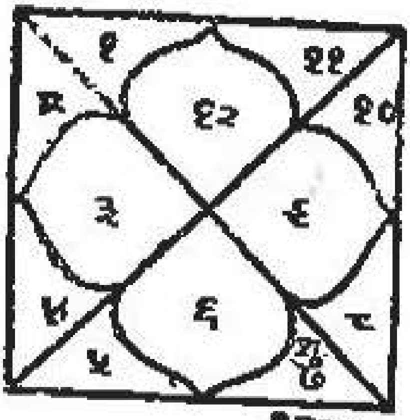

२१८२

आठवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति लापरवाह किस्म का होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन की वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब से परेशानी रहती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव : शुक्र

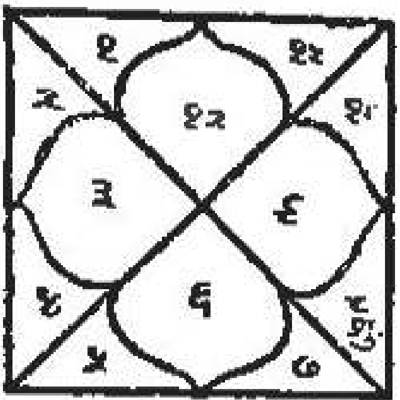

२१८३

नवें भाव में सामान्य मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि में रुकावटें आती हैं, परन्तु जीवन आनन्दमय बना रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख कुछ कमी के लाभ मिलता है, परन्तु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : दशमभाव : शुक्र

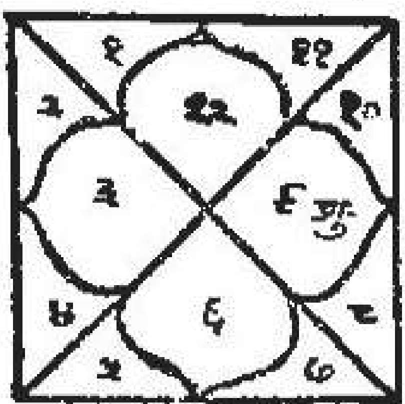

२१८४

दसवें भाव में सामान्य मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय पक्ष में भी त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी चतुराई के बल पर उन्नति करता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : शुक्र

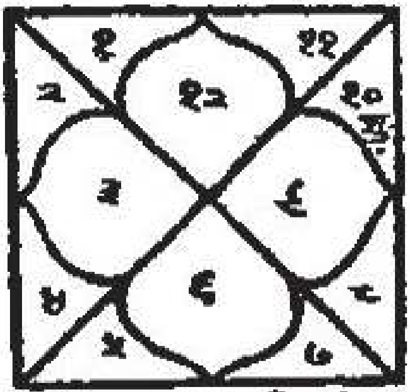

१२८५

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ अपनी आमदनी में अत्यधिक वृद्धि करता है। आयु, पुरातत्त्व शक्ति तथा पराक्रम की भी विशेष वृद्धि होती है। भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है। स्वार्थ-साधन में चतुर होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि का तो लाभ होता है, परन्तु सन्तान पक्ष में प्रयत्नों से ही सफलता मिलती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : शुक्र

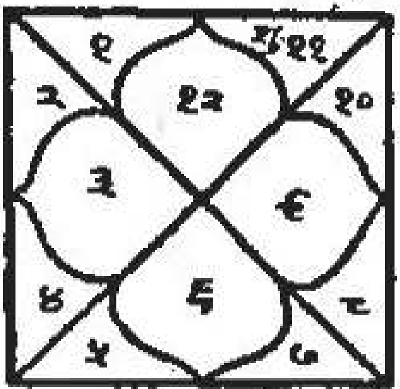

१२८६

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से उसे लाभ होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से चतुराई के बल पर शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति झगड़ों से बचे रहने का प्रयत्न करता है।

'मीन' लग्न में 'शनि'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : शनि

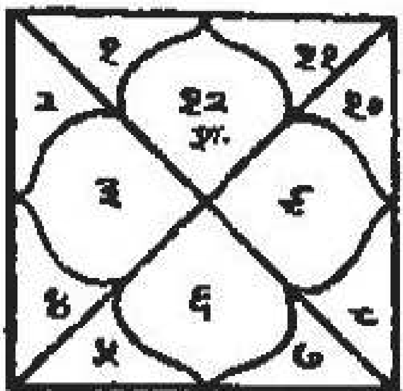

१२८७

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में न्यूनाधिकता बनी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय में हानि-लाभ की प्राप्ति होती रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य रहता है, राज्य से परेशानी होती है तथा व्यवसाय में संघर्षों का सामना करना पड़ता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : शनि

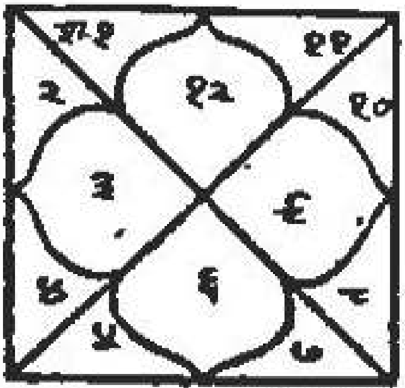

२३-८८

दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कठिनाई आती है तथा हानि भी होती है। कुटुम्ब का अल्प सुख मिलता है। बाहरी सम्बन्ध हानिकारक सिद्ध होते हैं। तीसरी मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है।

सातवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब रहती है, परन्तु धन का संचय नहीं हो पाता।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : शनि

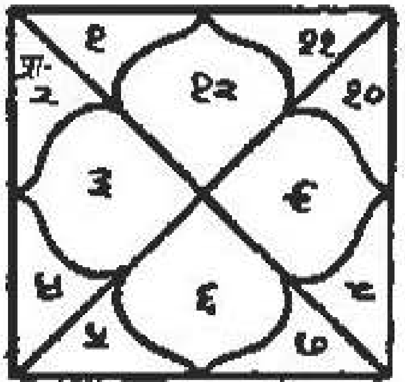

९२-८

तीसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से भाई-बहिनों द्वारा सुख-दुःख दोनों ही प्राप्त होते हैं तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कठिनाई रहती है तथा विद्या-बुद्धि की कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कुछ कमी रहती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : शनि

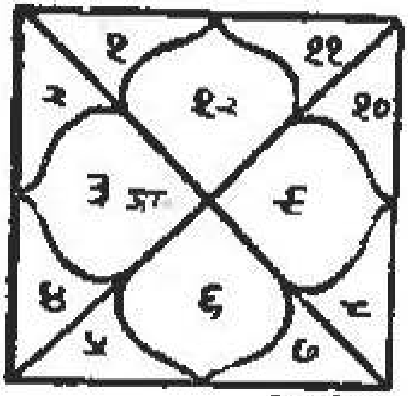

२३-९०

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा झगड़े के मामलों में लाभ-हानि दोनों ही होते हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं। दसवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : पंचमभाव : शनि

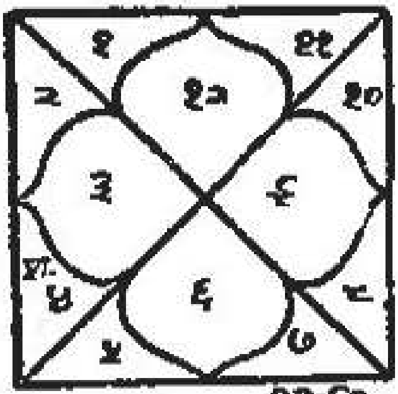

२३९१

पाँचवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को सन्तानपक्ष से हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति होती है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय-पक्ष से हानि-लाभ दोनों होते हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से आमदनी में वृद्धि होती रहती है। दसवीं नीच-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से धन-संचय की शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब से क्लेश मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : षष्ठभाव : शनि

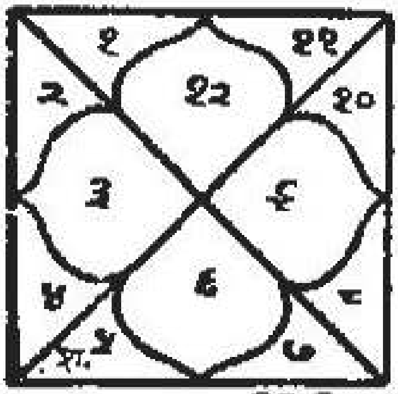

२३९२

छठे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों में खर्च करके लाभ उठाता है। बीमारी में भी काफी खर्च होता है।

तीसरी उच्च-दृष्टि से मित्र राशि में अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। दसवीं मित्र दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तमभाव : शनि

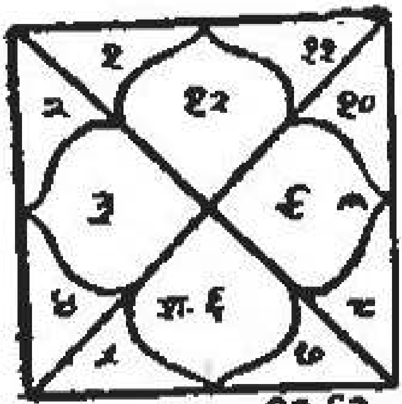

२३९३

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय में सुख-दुःख तथा हानि-लाभ दोनों प्राप्त होते हैं। खर्च की परेशानी रहती है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में उतार-चढ़ाव आते हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ कमजोरी रहती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता के सुख में हानि-लाभ दोनों के योग रहते हैं तथा भूमि-भवन के सुख में कमी आती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : शनि

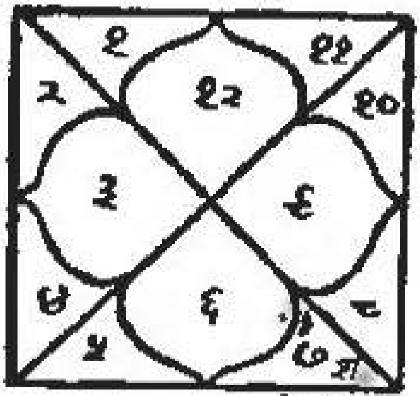

१३८४

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती है तथा बाहरी स्थानों से विशेष लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से असन्तोष तथा राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से सामान्य लाभ होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से शत्रु-राशि में द्वितीय भाव को देखने से धन का संचय नहीं हो पाता तथा कुटुम्ब से परेशानी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है और मस्तिष्क में चिन्ताओं का निवास रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव : शनि

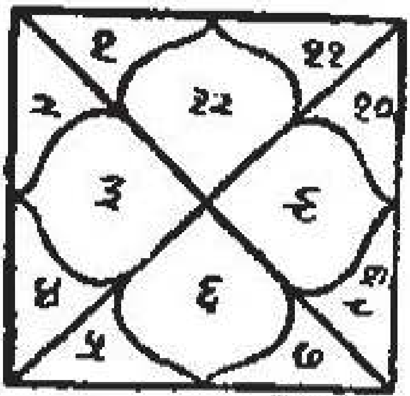

१३८५

नवेंभाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के भाग्य उन्नति की कुछ कठिनाइयों के साथ बाहरी सम्बन्धों के कारण होती है। धर्म-पालन में भी कमी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। दसवीं शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़े-टंटों से लाभ भी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : दशमभाव : शनि

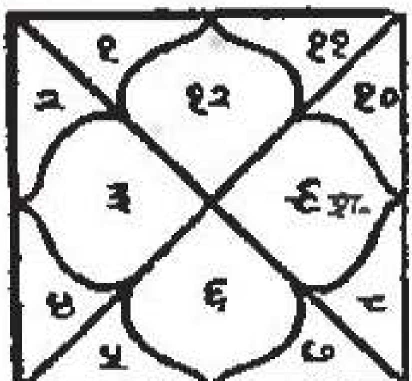

१३८६

दसवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु आमदनी अच्छी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से कुछ कमी के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में हानि-लाभ दोनों पहले हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : शनि

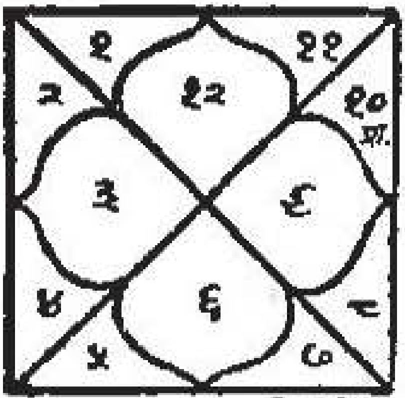

१३९७

ग्यारहवें भाव में स्वराशि में स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है तथा बाहरी स्थानों से पर्याप्त लाभ होता है। खर्च भी खूब रहता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा धन की प्राप्ति के लिए बहुत दौड़-धूप करनी पड़ती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कुछ कमी आती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी तथा रूखी बोली बोलने वाला होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : शनि

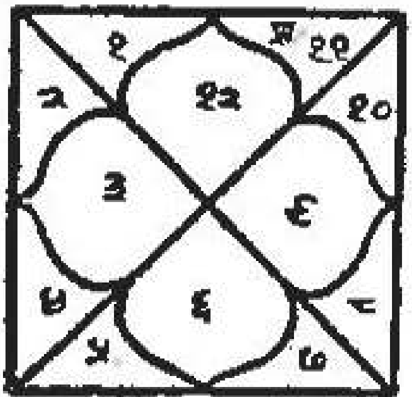

१३९८

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। तीसरी नीच-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की ओर से चिन्ता रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखनेसे शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा यश एवं धर्म की थोड़ी ही उन्नति हो पाती है।

'मीन' लग्न में 'राहु'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : राहु

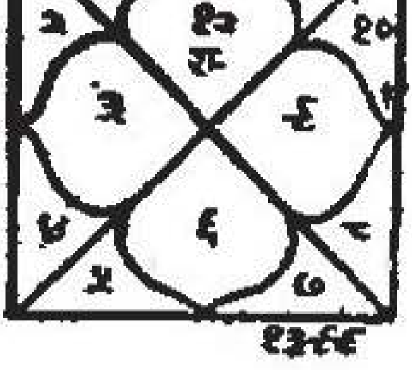

१३९९

पहले भावमें शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परन्तु वह युक्ति-बल से अपने प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि करता है तथा सभी कठिनाइयों पर विजय भी पा लेता है। वह अपने परिश्रम से तरक्की प्राप्त करता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : राहु

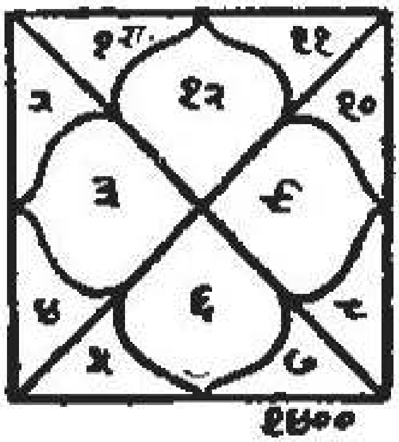

दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त नहीं होता। वह गुप्त युक्तियों के बल पर अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है, परन्तु कभी-कभी आर्थिक कष्ट उसे बहुत परेशान भी करते हैं।

'मीन लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : राहु

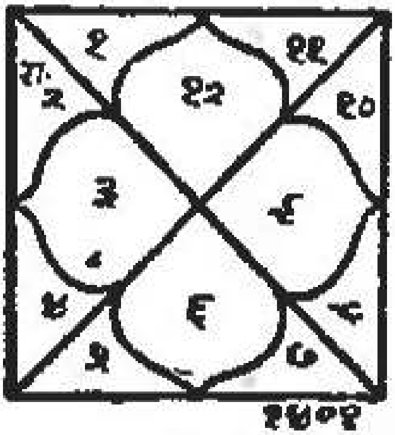

तीसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी तथा कष्ट का अनुभव होता है। वह बुद्धि एवं पुरुषार्थ द्वारा सफलता-प्राप्ति के प्रयत्न करता है तथा बहादुर और हिम्मती होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : राहु

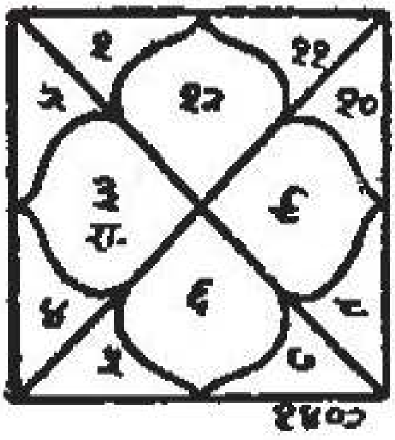

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित उच्च के 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता का विशेष सुख मिलता है तथा गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त हो जाता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप में भी सुख के साधन मिलते रहते हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : पंचमभाव : राहु

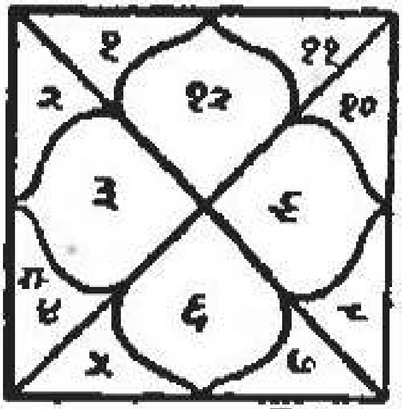

१५०३

पाँचवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा सन्तान-पक्ष से भी उसे कष्ट का अनुभव होता है।

ऐसे व्यक्ति की वाणी में रूखापन होता है तथा मस्तिष्क में चिन्ताएं घिरी रहती हैं। वह स्वार्थ-सिद्धि के लिए उचित-अनुचित एवं सत्यासत्य का विचार भी नहीं रखता।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : षष्ठभाव : राहु

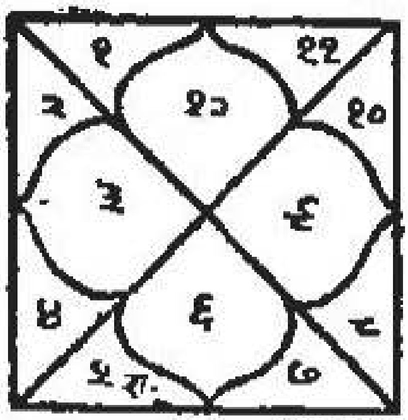

१५०४

छठे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा युक्ति-बल से शत्रुओं को परास्त करता है। फिर भी, शत्रु-पक्ष उसे बार-बार परेशान करता रहता है।

ननसाल-पक्ष से भी कुछ हानि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, बहादुर, चतुर, धैर्यवान् तथा सावधान होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : सप्तमभाव : राहु

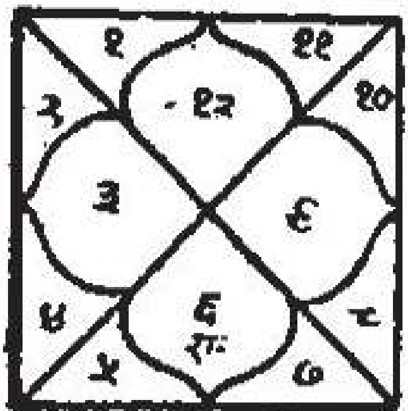

१५०५

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ कष्ट मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता, परन्तु वह अपने युक्ति-बल एवं चातुर्य से उन पर विजय प्राप्त करता रहता है। गृहस्थ-जीवन में बार-बार आनेवाले संकटों को भी दूर करता रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : अष्टमभाव : राहु

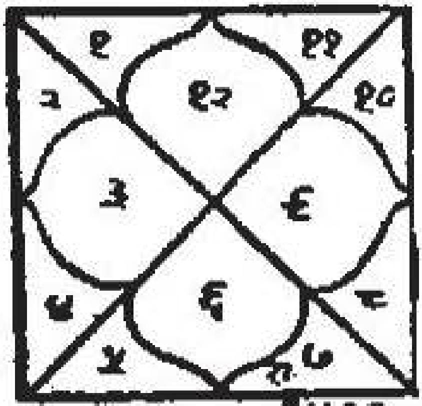

१५०६

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर अनेक बार कष्ट आते हैं, परन्तु आयु की वृद्धि में कमी नहीं आती।

पुरातत्त्व के विषय में भी कठिनाई के योग उपस्थित होते हैं। परन्तु वह अपनी चतुराई से उन सबका निराकरण करके लाभ उठाता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : नवमभाव : राहु

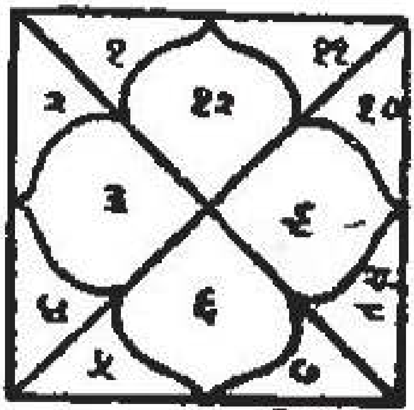

१५०७

नवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति में बाधाएँ आती रहती हैं तथा यश की प्राप्ति भी नहीं होती। परन्तु वह कठिन परिश्रम, गुप्त युक्ति तथा हिम्मत के साथ भाग्योन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ भी होता है और कभी-कभी अत्यधिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। लम्बे संघर्ष के बाद ही भाग्योन्नति हो पाती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : दशमभाव : राहु

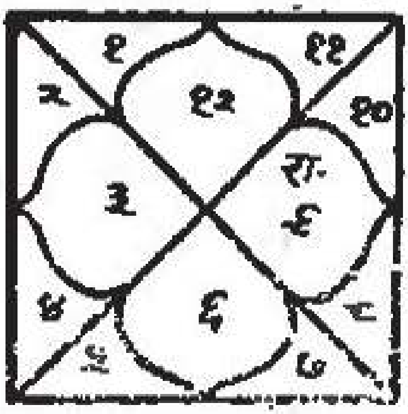

दसवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित मीन के 'राहु' के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष में महान् कष्ट, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय में बार-बार हानि का सामना करना पड़ता है। मान-प्रतिष्ठा में भी कमी रहती है। परन्तु वह अपने युक्ति-बल तथा परिश्रम से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहता है और कुछ सफलता भी पा लेता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : एकादशभाव : राहु

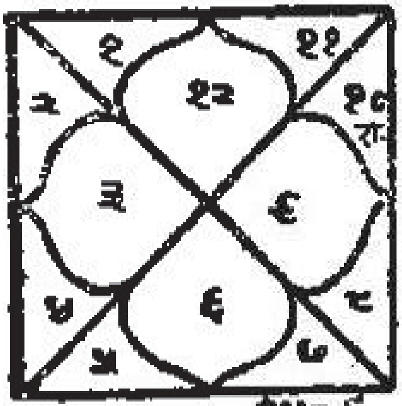

१५०९

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। वह अधिक मुनाफा कमाता है। कई बार धनोपार्जन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी आती हैं, परन्तु वह हिम्मत नहीं हारता तथा परिश्रम एवं धैर्य के साथ उन पर सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी आकस्मिक लाभ के अवसर भी मिलते हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : द्वादशभाव : राहु

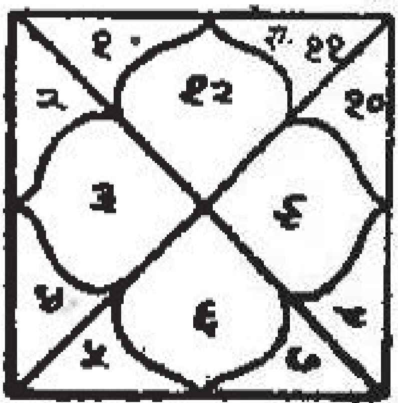

१५१०

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपनी हिम्मत, धैर्य, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के द्वारा उन सब पर विजय पाने का प्रयत्न करता है। उसे बाहरी स्थानों के संबंधों से भी कठिनाइयों का अनुभव होता है।

'मीन' लग्न में 'केतु'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : प्रथमभाव : केतु'

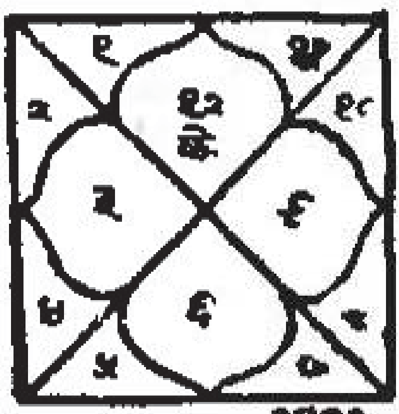

१५११

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के शरीर में सांघातिक चोट लगती है तथा कभी मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है किन्तु वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर अपने व्यक्तित्व का विकास करता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : पंचमभाव : केतु

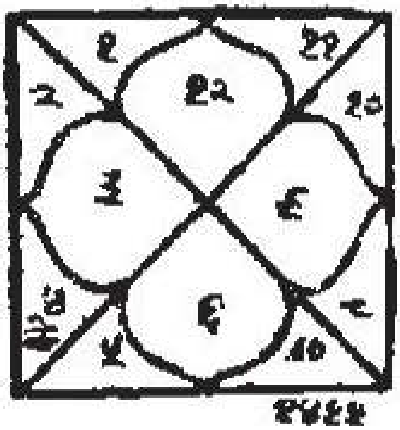

पाँचवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष में बड़े कष्ट तथा कमी का सामना करना पड़ता है। मस्तिष्क में चिन्ताएँ घिरी रहती हैं। विद्याध्ययन में भी अनेक कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा परिश्रम के बल पर सब कमियों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : षष्ठभाव : केतु

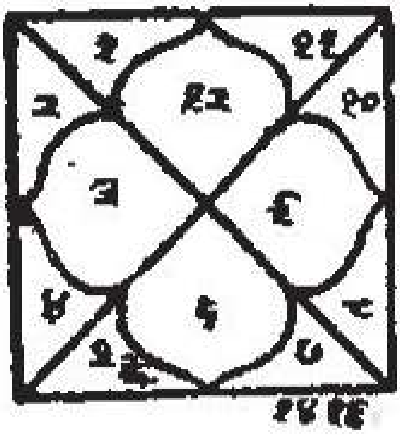

छठे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर निरन्तर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़ों के मामलों में सफलता पाता है।

शत्रु-पक्ष से परेशानी होने पर भी वह अपने हौसले को बनाए रखता है तथा बहादुरी से काम लेकर उस पर अपना प्रभाव स्थापित करता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : सप्तमभाव : केतु

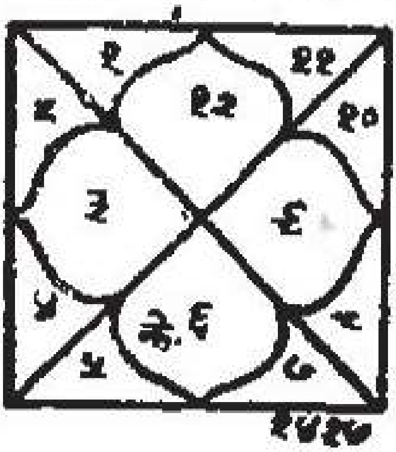

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ अशान्ति एवं कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। कभी-कभी स्त्री-पक्ष से घोर कष्ट मिलता है तो कभी सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति साहसपूर्वक अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : अष्टमभाव : केतु

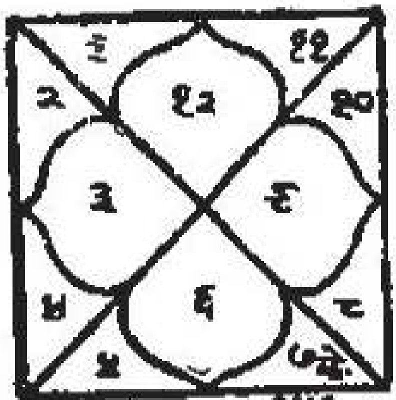

१५१८

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आयु पर अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकट आते हैं, परन्तु जीवन की रक्षा भी होती रहती है। पुरातत्व की हानि के योग भी उपस्थित होते हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों, चातुर्य तथा परिश्रम के बल पर लाभ उठा लेता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी तथा धैर्यवान् होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : नवमभाव : केतु

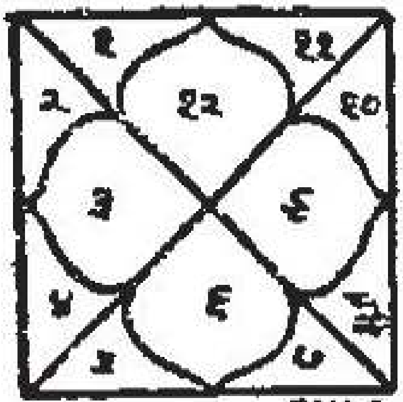

१५१९

नवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कठिनाइयाँ आती रहती हैं, परन्तु वह साहस, धैर्य, चातुर्य, गुप्त युक्ति तथा परिश्रम के बल पर उन पर विजय पाता है तथा उन्नति करता है। ऐसा व्यक्ति घोर संकटों के अवसर पर भी विचलित नहीं होता। अन्ततः उसके भाग्य तथा धर्म की कुछ उन्नति होती है, परन्तु यश में कमी बनी रहती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : दशमभाव : केतु

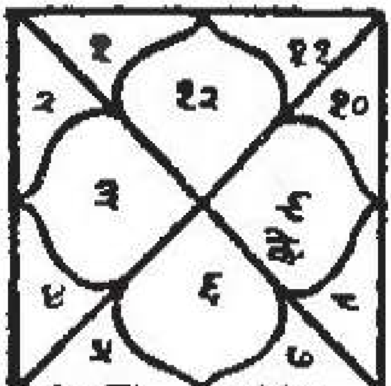

१५२०

दसवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'केतु' के प्रभाव से जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : एकादशभाव : केतु

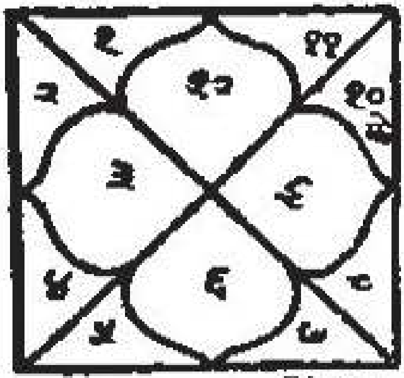

१५२२

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। कभी-कभी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह साहस एवं धैर्य के साथ उन पर विजय पा लेता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा बहादुर, धैर्यवान्, हिम्मती तथा स्वार्थी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : द्वादशभाव : केतु

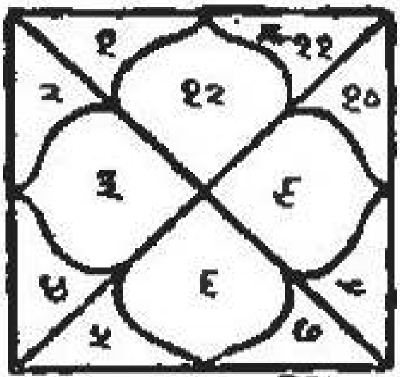

१५२३

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण कष्टों का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी असन्तोष मिलता है। परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा परिश्रम के बल पर कठिनाइयों का साहस के साथ मुकाबला करता है तथा उन पर विजय पाकर उन्नति लाभ करता है।